छत्र-प्रताप

लेखक
कुँ॰ दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविंद'

प्रकाशक
शान्ति-गृह धामनिया (मेवाड़)

(अस्थायी)
प्राप्ति स्थान
कुँ० दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविंद'
बागरा (मारवाड़)

मई '४८
प्रथम संस्करण
मूल्य एक रुपया

मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग ।

खेराड़ के अन्नकुबेर

पूज्य पितामह

रत्नलालजी उदयरामजी

की

पुण्य स्मृति में

निवेदन

कवि भट, भूषण पी गये घट को हाथों-हाथ !
कर्तित, छर्दित, रजभरा मिला मुझे कण नाथ ।।
कर अभ्यासी कलम के क्या जानें तलवार !
बहुत कठिन फिर समझना है 'प्रताप' के वार ।।
विषमावस्था हेतु फिर पड़े छीलने भाव !
देख सकेगा क्षीणदृग भी भावों के घाव !!
जिनके जीवन का हुआ रण में उदय प्रभात;
लिखना उनके वृत्त क्या है साधारण बात ?
सार नहीं है ग्रंथ में, पत्र-योग है मात्र ।
पाठक यदि अपनायँगे, भर पाऊँगा पात्र ।।

बागरा (मारवाड़)
श्रा० कृ० ३-२०००

'अरविन्द'

छत्र-प्रताप

मंगलाचरण

लेखनी ! विचार कर
ताम्बूल उठाना, तुझे
पद-पद में से नद
अस्र के बहाने हैं;
रुद्र को रिझानेवाले,
यम को सुहानेवाले,
काली को नचानेवाले
रण प्रगटाने हैं;
जग, अग, गगन को
छानेवाले रणनाद
पदों से निकाल कर
प्रत्यक्ष सुनाने हैं;
स्वाभिमानी प्रताप के
स्वातंत्र्य के पाठ सब
भारती 'दौलत' हमें
फिर से सिखाने हैं।

प्रताप-प्रतिज्ञा

प्रण है 'दौलतसिंह'
करता प्रतापसिंह,
"रूपजात-पात्र में न
व्यञ्जन मैं खाऊँगा;

शय्या पर सोऊँगा न,
मूँछ मैं चढ़ाऊँगा न
जब तक चित्तौड़ मैं
जीत नहीं पाऊँगा।"

अकबर सोचता है,
अमीरों से पूछता है,
"क्षात्रजाता बेगमों को,
कहाँ छिपा पाऊँगा;

भेज दूँ आधी को मक्का,
भेज दूँ मदीना आधी,
मैं भी राज छोड़कर
काजी बन जाऊँगा।"

संधि का प्रस्ताव

जोधपुर-रामा वामा,
बीकानेर - नितम्बिनी,
जयपुर - जातापत्या,
मालवाभिसारिका ;

काशमीर - रूपाजीवा,
पंजाब - प्रमदा - रति,
अग - बंग - युवतियाँ
सुहृम्र्य - संचारिका ;

बंधकी बिहार - गौरी,
अंगना बरार वर,
काबुल - केशिनी - कामा,
कच्छ - सहचारिका ;

समाज 'दौलत' इन
रामाओं का साज कर
राणा को लुभाने लगी
दिल्लीगढ़ - बारिका ।

अकबर का आतंक

जिसके सैनानी बंग,
दोआब, पंजाब, अंग
जीत कर काबुल में
बढ़ते दिखाते हैं;

कच्छ से आसाम तक,
हिन्दु से नीलाग तक
जिसके सेवक लखो
ढोलें उगाहते हैं;

अजब है बल ऐसे
'दौलत' शाह का जिसे
बड़े - बड़े राजा - राणा
मस्तक झुकाते हैं।

लेकिन मुगल - सैन्य
प्रताप के प्रदेश को
दूर रहा जीतना तो
छू भी नहीं पाते हैं।

छोटे - बड़े महीप हैं
कन्या - कर देने लगे,
हरम भराने लगे
शाही - सरदार हैं।

गुजरात, राज - भूमी,
अंग - बंग, मालवा में
खेलता मुगलराज
कन्या का शिकार है।

भारत की राजकन्या
अबला 'दौलत' एक
मेदपाट - मथुरा में
लभती निस्तार हैं;

जहाँ पर महिपति
शंकर प्रतापसिंह
अकबर - अनंगारि
शिव - अवतार है।

महिषी कहाती थीं जो
बीबी हैं कहाती आज ;
रणवास भूलकर
हर्म्य को सजाती हैं !

अक्षत चढ़ाती थीं जो
जाकर मंदिर में वे
देखो, आज बुर्का ओढ़े
मस्जिद को जाती हैं !

कहूँ क्या !! 'दौलत' धिक् !
भारत के भूमीपति !
तुम्हारी कुमारी देखो,
किसको रिझाती हैं !!!

धन्य हैं ! प्रतापसिंह !
तेरे ही प्रताप से रे !
हिन्दूजा सजाति - वर
मेवाड़ में पाती हैं ।

सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी
खाते हैं मीरों के संग,
रहते हैं साथ साथ
सोते हैं निवेश में।

भारत की राजकन्या
कहाती हैं बेगमें, वे
रहती हैं हरम में
बीवियों के वेष में!

आगम - पुराण गये!
कलमा - कुरान रहे!
गोलक सजाये गये
दीनेलाही - वेष में!

राजन् प्रतापसिंह!
कलि में 'दौलतसिंह'
बच रहा हिन्दूत्व है
एक तेरे देश में।

महीश, महिषी लगे
धोने पद हूरमा के,
बाहुज मुगल - पद
चूमते दिखाते हैं!

बाहुज के पुत्र-पौत्र
प्रतिहारी होने लगे,
हरम - गुसलखाना—
नवीश कहाते हैं!

भ्रातृजा, भगिनी, बेटी
ब्याह कर क्षात्रपति
शाह के बने हैं नाती,
मनसब पाते हैं।

छोड़कर मेवाड़ के
क्षत्रिय 'दौलतसिंह'
और सब क्षात्रकुल
संकर दिखाते हैं!!

रानियें दिखाई देती
बनी हुई बीबियें औ
अमीर हैं बने हुए
क्षात्रप दिखाते आज।

हरम नवीश. मीर,
उमराव बने हुए
राजाओं के राजपुत्र
देखने में आते आज !

शाह से भगिनी, बेटी
ब्याह देने वाले नृप
मुगल कहाते तथा
गुलाम कहाते आज !

यदि जो 'दौलतसिंह'
होते न प्रतापसिंह
उस काल में, तो हिन्दू
रह नहीं पाते आज

कैसे कैसे भारी हुए
युद्ध हैं जाया के हित
अक्षत कन्या के अब
डोले दिये जाते हैं।

स्वयंवर तोड़ कर
अमीर के मीर के औ
साथ में भारतपति
निकाह पढ़ाते हैं।

अजब है खूब तेरा
आतंग मुगलपति !
केहरि भारत-भूप
छिपते लखाते हैं !

छोड़ कर स्वाभिमानी
प्रताप 'दौलत' एक
और सब राज-कन्या
शाह से ब्याहते हैं।

महातप

नलिनी-सी भुवन में
विलसती थी जो कभी
वही राणी भुवन के
घट भर लाती है।

खाती थी जो मिष्टकंद,
कंद भी न पाती अब,
दासी बिना रही न जो,
चक्कियाँ चलाती है।

अकटक रही न जो,
कटक रिझाती अब,
धेनुका पै जाती थी जो
रेणुका उड़ाती है!

कहूँ क्या, 'दौलतसिंह'
स्वाधीन प्रतापसिंह!
तेरा दुःख याद कर
पृथ्वी हिल जाती है !!

अटि से निकलकर
जिनने न शिखिन भी
देखे, देखो बन में वे
शिखिन जलाती हैं!

कनक कलाप बिना
पल भी जो रहीं न, वे
विपिन में कलाप से
मन को रिझाती हैं!

करते हैं ऐश अन्य
महीप 'दौलतसिंह',
जिनकी कन्यायें देखो
हूरमा कहाती हैं!

त्याग-भार प्रताप का
झेल पाती है न मही,
देश-प्रेम प्रताप का
अप्सरायें गाती हैं।

मान का अपमान

मानसिंह महीप ने
मुगलपति से कही
लाखगुनी कर बात
शिर के दुखाने की।

अन्य मीर-उमराव
भड़काने लगे वहि;
बोल उठा सुनकर
शाह बात ताने की।

तलवारें खिंच गईं,
जिमि शेष-रसनाएँ
निकली हो कामना से
आतप को खाने की।

आधों ने 'दौलतसिंह'
जिह्वायें निकाल दी औ
सूख गये आधे सुन
हल्दी-घाटी जाने की।

अकबर को उद्बोधन

रघु से थे लाख गुने
सीतापति रामचन्द्र,
जिन्होंने प्रख्यात बली
रावण को जीता है।

कोटि गुने राम से थे
जानकी के शिशु सुत,
राम को भी जिन्होंने
सहज ही जीता है।

जिस रघुकुल में यों
बल गुने होते आये,
उस कुल-पति को तू
जीतने को जीता है!

'दौलत' दहलीपति!
मति तेरी मारी गई;
क्यों न जाके चैन से तू
मस्जिद में सोता है।

महाबली मेरक को
जीत सके नृप भद्र,
जीत सके निष्कुंभ को
सुदर्शन नृपवर,

रामचन्द्र जीत सके
दशमुख कुचाली को,
जरासिंध दुर्ज्ञानी को
जीत सके कृष्णवर,

पार्थवर जीत सके
जयद्रथ पिशुन को,
दनुज को जीत सके
वराह सबलवर;

'दौलत' कुमारी-कामी
कुचाली मुगलपति !
आये हैं विजय पाते
धर्मिष्ठ पापिष्ठ पर।

रण-सज्जा

देखिये, 'दौलतसिंह'
नृसिंह प्रतापसिंह
आज शाहीचमू पर
चढ़कर जाते हैं।

नभ में धूलि है छाई,
दीखता है रवि राई,
नग जिमि लतादल
हिलते दिखाते हैं।

उमड़ा है तोमतम,
ग्रहण-ग्रसित जिमि
विपिन महानतम,
नगर दिखाते हैं।

शंकर वृषभ पर,
काली पंचानन पर,
प्रताप चेटक पर
हेरते सुनाते हैं।

मत्तंग ‘ दौलतसिंह ’
साज कर गजसैन्य
महीप प्रताप जंग
जीतने को आये हैं।

मदधि है बह रहा,
डूब गये कानन हैं,
बह रहे नगर हैं,
मग-नद धाये हैं।

शंकर कैलाश पर,
काली शव - गिरि पर,
चढ़कर शैल पर
सैन्य बच पाये हैं।

अहीश कठिनता से
सैन्यों का ‘दौलतसिंह’
करके सहस्र फण
भार ढोह पाये हैं।

शिर्षण्य हैं शिर पर,
कवच हैं कटि पर,
खड्ग हैं फलक पर,
बल्लम उठाये हैं;

निषंग हैं पृष्ट पर,
कोदण्ड हैं स्कंध पर,
ढाल हैं सन्पृष्ट पर,
छुरिका छिपाये हैं।

शंकु हैं अगल पर,
इली हैं बगल पर,
कर में विशालकाय
मुद्गर उठाये हैं;

मेद-पाट वीरों का यों
साज कर सैन्यदल
'दौलत' प्रतापसिंह
संगर में आये हैं।

कृतहस्त शृङ्ग पर,
पादात आतर पर,
आयुधीन घाटी पर,
बिठलाये गये हैं;

प्रासिक बगल पर,
असिहेति नाभि पर.
सायुंगीन वक्ष पर
सवराये गये हैं।

पारिधिस्थ हय पर,
संशप्तक गज पर,
धानुष्क शकट पर,
चढ़वाये गये हैं।

फलक लगाये हुए
प्रताप चेटक पर
दीखते 'दौलत' मानों
यम चढ़ आये हैं।

कितने ही सैनानी तो
घर बैठे मर गये,
कितने ही मर गये
अयन में धाक से।

कितने ही मर गये
अटवी में पड़कर,
कितने ही मर गये
संगर में हाक से।

केहरि प्रतापसिंह
करते हैं हाक ऐसी,
छूटते हों बाण जैसे
शंकर—पिनाक से।

हाक में से फूटती है
अनल 'दौलतसिंह',
फट गये नग, सैन्य-
जल गये आक-से।

दिग्गज - अचलवंत,
तुरंग - तरंगवंत,
गरद - तूफानवंत,
नृधि बढ़ आया है।

शकट - मकरवंत,
पायदल - मत्स्यवंत,
अश्वारोही - सीपीवंत
तुर्कधि रिसाया है।

परन्तु 'दौलतसिंह'
प्रताप—अगस्त्य ने तो
एक ही चुल्लू में उसे
पीकर सुखाया है।

बिना ही लगाये गोते,
बिना ही उठाये श्रम
मेदगोताखोरों ने तो
मुक्तादल पाया है।

चौहान मुगल संग,
पूर्विया पठान संग,
गोलक सैयद संग
लड़ते दिखाते हैं।

झाला शाहशाला संग,
प्रताप सलीम संग,
भील ऐरे-गेरे संग
भिड़ते लखाते हैं।

रुण्डका दिखाई देती
रुण्ड - मुण्डभृत सर्व,
राणा की हूँकार पर
नग हहराते हैं।

'दौलत' पूर्वज देखो,
स्वाधीन प्रताप पर
पेख पेख कर कृति
सुम बरषाते हैं।

शिला पर शुण्डादण्ड
भुजदण्ड प्रताप के
षण्ड को पछाड़ते हैं।
नभ में उछाल कर,

मस्तषण्ड प्रसुण्ड को
अंग-भङ्ग करते हैं,
मारते हैं गण्ड पर
मुण्ड को पछाड़ कर,

शिलाखण्ड, गण्ड पर
मत्तगज हयंद को,
मारते हैं सहज में
आखुवत ताड़ कर,

देखकर महाराण
देखिये 'दौलतसिंह'
भागता है जहाँगीर
टोपी को संभालकर।

मत्तषण्ड-मानस को
चीरती निकलती है,
लेती प्राण मांसल के
काल-घरवाली है;

सैन्य-घटा-दल को है
भेदकर चमकती,
चमकती तिमिर में
जैसे घनवाली है,

भूत-प्रेत-कपाली को,
पिशाचिनी, शाकिनी को
भोजन कराती आज
भूतनाथ वाली है।

कहे क्या, 'दौलतसिंह'
शिव है प्रतापसिंह,
जिनके कर में काली
द्रुतधार वाली है।

चंडिनी-सी, भण्डिनी-सी,
नागिनी-सी, दामिनी-सी,
आशुग-सी लसती है
राणा-खड्ग जंग में।

मुण्ड, शुण्ड, हयखंड;
नभ में सघन छाये;
भूत-प्रेतगण सङ्ग,
शिव जी हैं रंग में।

साधुनाद, सिंहनाद,
हाहाकार, ललकार
रौरव-क्रन्दन जैसा,
भरा है उत्तुंग में।

खेल रहा 'दौलत' है
मृगया प्रतापसिंह।
मरते हैं तुर्क-मृग,
लाख-लाख सङ्ग में।

मचा है ताण्डव महा-
राणा के बदन पर,
शारदा भी यह वृत्त
कह नहीं सकती।

कौमारी किरीट पर,
काली, शिवा भुज पर,
कात्यायनी जिह्वा पर
ताण्डव है करती।

दुर्गा, अम्बा जानू पर,
भवानी, चण्डिका दोनों
हैं विशाल वक्ष पर
चढ़ती उतरती।

'दौलत' हजार तुर्क
एक एक बार में ये
चीरतीं, पछाड़ती हैं
टूक टूट करती।

कितने ही विकलाङ्ग,
पङ्गु, अङ्ग-भङ्ग हुए,
कति हुए अवनाट
मुष्टि के प्रहार से।

कितने ही मत्तषण्ड,
मांसल अपङ्ग हुए;
वितुण्ड विशुण्ड हुए
कति ही कटार से।

रक्तझर, मदझर
और गिरिझर तीनों
निकले बहाते हुए
मुगल सेवार - से।

शंकर 'दौलत' बचे
चढ़कर अग पर,
काली बर्ची लगकर
आमिष - प्रहार से।

मुगल को मार डाले,
पठानों को चीर डाले,
तृणवत तोड़ डाले
अधिप अनि के हैं।

चौहान चंपत हुए,
राठौड खिशक गये,
चंदेले, पवार नहीं
पलभर टिके हैं।

मत्तंग, तुरंग फेंके
पकड़ पकड़ कर,
ऐसे मानों नवजात
शावक शुनि के हैं।

'दौलत' अनूप शौर्य्य
देखकर प्रताप का
सलीमशाह के लाले
पड़ गये जी के हैं।

तुर्क को मञ्जरी सम,
शेख को वल्लरी सम,
सैयद को तृण सम
काटती दुधार है।

गज को जंभीर सम,
अश्व को जंबीर सम,
उष्ट्र को कर्नार सम
छेदती कटार है।

राणा - करवालिनी का
कौशल निहारकर
भागते 'दौलतसिंह'
मुगल - सियार हैं।

मन में विचारता है,
सोचता है जहाँगीर
'कर में दुधार है कि,
कर ही दुधार है।'

कहते हैं षण्ढगणँ
समर से भागे हुए,
मारे गये भट सब
संगर में शाहवर !

उसके बल का पार
नहीं है, केहरि सम
टूटता है वह राव,
मीर - उमराव पर ।"

सुनकर हूरमायें
दौड़ने - भागने लगीं,
उड़ती हो सुथनियां
जैसे कहीं अटि पर ।

नृसिंह प्रताप ! तेरी
धाक से 'दौलतसिंह'
भाग गया शिकरी को
दहली से अकबर ।

पर्वत कड़क उठे,
शेषनाग डोल उठे,
रत्नाकर खौल उठे,
प्रलयाम्बु उमड़ा ;

नभ में गरद छाई,
रवि बन गया राई,
गढ़का न लगे पता,
ऐसा तम उमगा ;

दिन में ही शिकरी ने
कूकने, हूकने लगे
केका-शिवा—आशंका से
शाह गया घबरा।

इतने में चारिक ने
'दौलत' सुनाया वृत्त
'हार गये जहाँगीर',
शाह गये पथरा।

"सैयदों को तेग पर,
पठानों को पंजलि में,
मुगलों को एडूका में
रखता है शाह ! वह ।

शेख को शंकु में और
तुर्क को इली में तथा
रखता है ऐरे - गेरे
छुरिका में शाह ! वह ।

बल्लम में रखता है
आपके सम्बन्धी सब,
आप पर रखता है
सुकृत संधान वह ।"

विचारे 'दौलत' शाह
दिल्ली से शिकरी आये,
आगरा को शिकरी से
अब फिर भागे अह ।

अमीरों का वक्तव्य

"जगध्र को जीत सके
पुरन्दर सुरपति ;
सुरेश को जीत सके
मेघनाथ, लेखिये।

रामानुज जीत सके
मेघनाथ प्रवीर को ;
लक्ष्मण को जीत सके
दशानन, पेखिये।

रावण को जीत सके
रामचन्द्र रघुपति,
राम को भी जीत सके
लव कुश, देखिये।

'दौलत' (अमीर, राव
शाह से कहने लगे)
लव - पुत्र जीते जाँय
जिससे, सो लेखिये।"

"दशानन के-से शिर,
राम के-से भुजदण्ड,
भीमसेन के-सा वक्ष,
आयु हो ऋषभ की।

कटि दुर्योधन की-सी,
जानु जरासिंध की-सी
और दृग-दृष्टि होवे
राधिका-वल्लभ की।

(कहते हैं मीर तो भी)
अकबर ! सुनो हम
देखते ही मर जावें
लपक बल्लम की।"

(रोने लगे मीर और
'दौलत' कहने लगे)
जावें नहीं हल्दी-घाटी,
सौगंध आलम की।"

"धनुधर दशानन,
धनुधर रामचन्द्र,
धनुधर पार्थवर,
द्रौण धनुधर भी;

धनुधर एकलव्य,
धनुधर कर्णराज,
धनुधर पृथ्वीराज,
भीष्म धनुधर भी;

चेटक की लपक को
बेंध नहीं सकते हैं
शाह सब मिलकर
द्रोक धनुधर भी।"

कहते, कहते मीर
रोने लगे, फूट पड़े,
विमूढ़ 'दौलतसिंह'
हुये दिल्लीधर भी।

अकबर आखु है तो
ओतु है प्रतापसिंह;
ओतु अकबर है तो
भल्लुक प्रताप है।

अकबर शिवा है तो
गज है प्रतापसिंह;
गज अकबर है तो
केहरि प्रताप है।

अकबर वन है तो
वह्नि है प्रतापसिंह;
अकबर वह्नि है तो
वारिधि प्रताप है।

शाह का 'दौलतसिंह'
प्राणों का ग्राहक हर
रूप में अथवा हर
काल में प्रताप है।

महीप प्रतापसिंह
सिद्ध - साधु - संतापक
रावण - दमनकर
राम रघुवर है;

स्वकुल - संभव - जाया
द्रौपदी के प्रपीड़क
कौरव - दमनकर
पार्थ धनुधर है,

विश्वेश - प्रबलरिपु-
यातुधानु - अधिपति-
हरण्यकश्यप - अरि
नृसिंह श्रीधर है।

दिल्लीपति अकबर
शाह का प्रतापसिंह
दुर्धर्ष प्रचण्ड रिपु
'दौलत' अमर है।

अंतःपुर में

"दिलावर ! सुना है कि
शिव हैं प्रतापसिंह,
भूत - प्रेत मनुज के
वेष में हैं लड़ते;

मुगल - सैनानियों के
हाथ बंध जाते हैं, वे
आगे बढ़ पाते न, न
पीछे हट सकते;

प्रलय - ताण्डव काली
करती है करवाली,
वार से उसके नहीं
कोई बचे सकते;

(चिबुक पकड़ कर
बीबियें यों कहती हैं)
प्रिय से प्रताप स्नेह
'दौलत' हैं रखते ।"

'होने भी न पाया प्रिय,
फातिमा का शयाचार,
बिचारी दुलारी, देखो
बन गई विधुरा।

चेटक में हनुमान,
राणा में शंकर और
कटार में बसती है
काली महा प्रवरा।

कटते हैं, मरते हैं
गाजर गूलर सम
निस्त्रिंश प्रताप की से
मीर, राव, उमरा।

(मीर से 'दौलत' बीबी
बिलखाती कलपाती
रोती हुई कहती है)
मानो दिल-बजरा।"

"मनसब चाहिये न,
मीरपद चाहिये न,
और पद चाहिये न,
कह दो यों शाह से।

गिरि में घिरा दें आप,
मरवा दें ऐसे हमें;
क्रीत नहीं हम जो कि
मरें गुमराह से।"

छोड़ती 'दौलत' नहीं,
मीर को जरा भी बीबी,
रहती है आठों याम
सटी हुई नाह से।

मंच से उतर कर
कभी नहीं चली थी जो
जा रही है आमखास
लटकती बाह से।

'गोधूली है !' 'नहीं, अम्मा !
उड़ती है पद-धूली।'
'रंभण है !' 'नहीं, बूआ !
तुमुल नृनाद है।'

'तिमिर है !' 'नहीं, बीबी !
गजता है छाई हुई।'
'सांध्यघंटारव ! 'नहीं,
नगाड़ों का नाद है।'

'दीपालि है !' 'नहीं, ख्वाला
चलती है खड्ग नङ्गी।'
'फकीर आदम-नाद !'
'नहीं, शिवनाद है।'

'दौलत' श्रवण कर
निमाज का उन्निनाद
बीबी भागी कूद कर,
भूल गई नाद है।

दिल्ली की अवदशा

मसनद उठ गये,
गलीचे उखड़ गये,
बिछ गई बैठकों में
कालीन कनाते हैं।

घर - घर रोना - धोना,
चालीसा प्रत्येक घर,
घर नहीं ऐसा जहाँ—
गम की न घाते हैं।

राव मीर पहिनते—
काले काले वसन हैं,
दिन में ही दहली में
दीखतीं कुरातें हैं।

सुदृढ़ 'दौलत' तालें—
घर - घर लग गये।
हाटों में भी रहे नहीं
तालें, ऐसी बातें हैं।

कपालिक कूदता है,
बैतालिक नाचता है,
भूत-प्रेत चिल्लाते हैं,
शमशान जागे हैं।

कब्रों में से काढ़कर
भूतनी - प्रेतनी शव
फोड़ती उपल पर
मस्तक अभागे हैं।

दहली विरान हुई,
हरम उजड़ हुए,
दिल्ली में शिवा के अब,
गाजें और बाजें हैं।

अकथ 'दौलत' हुई
बेगमों की बुरी गति ;
भूत - प्रेत बेगमों के
पीछे और आगे हैं।

विशेष संवाद

अकबर शाह ने है
आमखाश किया भारी,
बड़े - छोटे मीर - राव
सब को बुलाये हैं।

अकबर उदास है,
उमराव हताश हैं,
सैनानी 'दौलत' दीन
तन में सुखाये हैं।

अटक - अटक कर
बोलता है अकबर,
(कहो, अब कैसे करें ?
खोटे दिन आये हैं।)

इतमें में चारिक ने
भामा की सुनाई कथा;
सुन कर शाह, मीर
वहीं चिपकाये हैं।

बीरबल, पृथ्वीराज
जिसके हैं पद युग्म
जिसके बिहारीमल,
भगवान स्कन्ध हैं;

अब्दुल फजल, फैजी
जिसके हैं नेत्र युग्म,
जिसके अमीर, मीर,
राव भुजबंध हैं;

रसना है खानखाना,
ग्रीवा है टोडरमल,
जिसके सलीम, मान
हृदय प्रबन्ध हैं;

राणा ने 'दौलत' ऐसे
बली को झुकाया और
पछाड़ा पकड़ कर
सैन्य - केशबन्ध है।

जीता होगा देश तू ने
बीबियों का, बेगमों का,
चाँदबीबी यहाँ नहीं,
जिसे जीत लेना है।

बेगमें नहीं हैं यहाँ
बाज बहादुर खाँ की,
आसफ, आधम खाँ का
जिन्हें ग्रह लेना है।

नहीं है दुर्गावती का
गढ़ गोंडवाना यहाँ,
जिसे छल - कपट से
जय कर लेना है।

कहूँ क्या 'दौलत' किस
होश में है अकबर ?
प्रताप की दुधार से
यहाँ लोहा लेना है।

मारना हेमू का है न,
जीतना दिल्ली का है न,
सिकन्दर सूर का न
बंदी कर लेना है:

अधम आधम खाँ का
जीने से गिराना है न,
नही बहराम खाँ का
मक्के भेज देना है:

नहीं हैं बिहारीमल
और मानसिंह यहाँ,
नहीं बहादुर खाँ का
देश जीत लेना है।

कहूँ क्या, 'दौलत' किस
होश में है अकबर!
प्रताप से बैर कर
घर फूँक देना है।

नहीं है टोडरमम
और बीरबल यहाँ,
लोभ में पड़ कर
भृत्य होना मान लें।

नहीं हैं बिहारीमल
और भगवानदास,
जो कि बेटी ब्याह कर
नातीपन बाँध ले।

पदों के भूखे न यहाँ
षण्ड-पण्ड कोई है, जो
तन में रहते प्राण
तेरा लोहा मान ले।

कहूँ क्या, 'दौलत' किस
होश में है अकबर!
राणा की कटार में है
काल तेरा जान लें।

तम पर तारा जिमि,
तारा पर शशि जिमि,
तम - तारा - शशि पर
किरण - समाज है ।

मृग पर वृक जिमि,
वृक पर व्याघ्र जिमि,
मृग - वृक - व्याघ्र पर
वन - महाराज है ।

नाग पर केकी जिमि,
केकी पर श्येन जिमि,
नाग - केकी - श्येन पर
वधक - समाज है ।

तुर्क पर मीर इमि,
मीर पर बादशाह,
तुर्क - मीर - शाह पर
मेदपाट - राज है ।

भारद्वाज गुह पर,
नृसिंह कश्यप पर ,
बली जरासिंध पर
वासुदेव लेखिये ।

भीम दुर्योधन पर ,
हृषीकेश दैत्य पर ,
बलि नरपति पर
वामन को पेखिये ।

शिव मनसिज पर ,
चन्द्रगुप्त नंद पर ,
प्रचण्ड तारक पर
विजय विलोकिये ।

ऐसे ही 'दौलतसिंह'
दिल्ली गढ़ - पति पर
केहरि प्रतापसिंह
हिन्दू - पति देखिये ।

कुलों में है अवतंश
सूर्यजात नाभिवंश,
जिसमें ऋषभ आदि
हुये अवतार हैं।

भरत-से सार्वभौम,
सागर - से शूरवीर,
हरिश्चन्द्र जैसे हुये
जिसमें अपार हैं।

अहिल्या के संतारक,
रावण के विनाशक
रामचन्द्र जैसे हुये
विष्णु - अवतार हैं।

कलि में 'दौलत' उस
कुल में प्रताप हुये
अकबर - अनङ्ग को
शिव - अवतार हैं।

दशमुख - दलन को
दशरथजात हुये,
नृसिंहावतार हुआ
कश्यप - भंजन को।

देवकीसहज हंत
देवकीउरज हुये,
वामनावतार हुआ
बली के गंजान को

कच्छप, मच्छप हुये,
बराहावतार हुआ,
राम हुये अवतीर्ण
पिशुन - दण्डन को।

कलि में 'दौलतसिंह'
प्रताप यवन - हंत
शंकरावतार हुये
भारत - मंडन को।

दनु को सहस्र - चक्र,
रिपु को सहस्र - भुज,
देश - दुख - भार - हर
शेषनाग व्याल हैं।

योगी को परमयोग,
सिद्ध को सिद्धि का योग,
क्षत्रीकुल - घालक को
परशु कराल हैं।

जग को हैं आशापति,
धर्म को हैं आलवाल,
प्रजा को हैं प्रजापति,
गौओं को गोपाल हैं।

प्रताप 'दौलतसिंह'
म्लेच्छ - करालकाल,
स्वदेश - विशालढाल,
हिन्दूप्रतिपाल हैं।

अनंत घनावली - सी,
हिन्दू महासागर - सी
आदिक फैली है चमू
दिल्लीगढ़नाह की।

ऐसे नग जिन पर
सैनिक हैं बैठे हुये,
घेरे हैं चमू को नहीं
ठौर भी है राह की।

ताके पीछे हयदल,
हय पीछे पायदल,
मध्य में है स्थित अनि
जहाँगीर शाह की।

दुर्गति दौलत ऐसा
चीरकर सैन्यगढ़,
केहरि प्रताप आये
काट मूँछ शाह की।

तेरी रौद्र दृष्टि पर
दिग्गज होते हैं चल,
तेरी क्रूर दृष्टि पर
दव लग जाता है।

भ्रूकुटि संधान पर
त्रिलोक जाते हैं कम्प,
सहस्राक्ष सुरपति
इन्द्र हिल जाता है।

कहे क्या, 'दौलत' तेरी
भृकुटि को देखकर
भीमसेन बली का भी
वक्ष फट जता है।

जब से अदृष्टि हुई
शाह पर, बेगमों का
जमता न, बढ़ता न,
गर्भ गिर जाता है।

तपते हैं अग - जग ,
खोलते हैं निधि - सर ,
जड़-जीव पक गये ,
बलते कालिन्द हैं ।

चलती है उष्ण वायु ,
आठों याम है चित्कार,
राका में भी रामा नहीं
चाहती खाविंद हैं ।

कहे क्या 'दौलतसिंह'
ऐसा है निदाघकाल,
बन खाक बन गये ,
रहे न मलिंद हैं ।

शय्या में मुगलपति
काँपता है थर थर,
हेमर्तु प्रताप है औ
शाह अरविंद हैं ।

हैं शरदर्तु के दिन,
छाये हैं शरद - घन,
निरत है गिर रहा
तुहिन भुवन में।

नदी, नद, कूप, बाव
तड़ाग जलधि, सर
जम गये, मर गये
खग - मृग वन में।

अलिद हैं बंध पड़े,
दिन में ही कामनियें
निज निज पति संग
सोती हैं भवन में।

फिर भी 'दौलतसिंह'
विकल है अकबर,
शाह को है ज्येष्ठ राणा
शरद गहन में।

जजिया निषिद्ध हुआ,
गो-बध निःजड़ हुआ,
होना न मंदिर पर
अब वैसा पाप है।

मौलवी मक्का को गये,
काजी गये मदीना को,
हिन्दुओं में मिल गया
बादशाह आप है।

वेद अवमानें नहीं,
कुरान संमानें नहीं,
दीनेलाही - अनुयायी
अकबर आप है।

मेदपाट के - हरि 'के
अग्रिम 'दौलतसिंह'
दिल्लीगढ़ - दिग्गज का
घट गया दाप है।

छोड़ दिया तुर्की-जामा,
मुँड़वादी तुर्की-डाढ़ी,
भूल गये तुर्की - टोपी,
शाही - वेष रक्खा है।

हिन्दुओं से द्वेष नहीं,
मुस्लमों से राग नहीं,
मुगलों से स्नेह नहीं,
समभाव रक्खा है।

आगम - कुरान, वेद
सब को ही मानता है,
सुनता है, पढ़ता है;
राजभाव रक्खा है।

'दौलत' केवल एक
शाह ने प्रताप को ही
विशेप स्वभाव तुष्ट
करने का रक्खा है।

जटा-जाल शिर पर,
उपवीत तन पर,
कौशेय बदन पर,
त्रिपुण्ड लगाया है।

बाजू भुजबंध पर,
कंकड़ प्रगण्ड पर,
माला मणिबंध पर,
अजिन बिछाया है।

राम - राम जिह्वा पर,
दृष्टि राम - मूर्ति पर,
राम - कथा घर पर,
मंदिर बनाया है।

सुभट प्रताप! तेरी
धाक से 'दौलतसिंह'
बाना शाह मुगल ने
विप्र का बनाया है।

झटका गुमान रक्खा,
भूप का गौरव रक्खा,
कुल-लाज रक्खी तू ने
निखिल कृपाण से।

द्विज की मर्यादा रक्खी,
नारी का सतीत्व रक्खा,
हिन्दूपन जाने दिया
नहीं हिन्दुस्थान से।

कहें क्या 'दौलत' तूने
मलेच्छ मुगल दले
चेटक की ऐड़ी से औ
बल्लम से, बाण से।

अखण्ड स्वतंत्रता के
पुजारी प्रताप तू ने
बीज नहीं जाने दिया
क्षत्री का जहान में।

महीप पौरुष का भी
सिकन्दर महान से
लड़ना कहाता व्यर्थ;
दाग लग जाता आज !

पृथ्वीराज चौहान का
मुहमद गोरी से ओ !
निष्फल हो जाता जंग ;
यह घट जाता आज ।

धर्मरण गजनी से,
बाबर से संग्राम का
संगर विफल होता;
भारत लजाता आज ।

यदि जो 'दौलतसिंह'
होते न प्रतापसिंह;
कहीं देश आर्यावर्त्त
बोल नहीं पाता आज ।

रघु का प्रताप जाता,
हरिश्चन्द्र राजर्षि के
दृढ़ सत्यव्रत पर
बज्र गिर जाता आज !

दशरथ महीप के
अडिग बचन जाते ;
नरोत्तम राम का भी
यश घट जाता आज।

बिल में खिसक जाती
बापा की करवालिनी ;
कुम्भा और सांगा का भी
नाम मिट जाता आज !

यदि जो 'दौलतसिंह'
होते न प्रतापसिंह—
इक्ष्वाकु वंश पर
पानी फिर जाता आज !

वचन में दशरथ,
श्रम में श्री भागीरथ,
धर्म में श्री मेघरथ
और धर्मराज हैं।

धैर्य्य में श्री रामचन्द्र,
सत्य में श्री हरिश्चन्द्र,
शौर्य्य में श्री कृष्णचन्द्र
और द्विजराज हैं।

साहस में भीमसेन,
समर में हरिसेन,
बल में श्री जयसेन
और कंथुराज हैं।

कलि में दौलत पुनः
भारतमाता ने पाया
पाकर प्रतापसिंह
औरस - समाज है।

ब्रह्म की परमता मे,
विष्णु की वत्सलता में,
महेश की महिमा में—
घटती आजाती आज :

काली की करालता में,
विद्या की उदारता में,
लक्ष्मी की दक्षिणता में—
शंका घट जाती आज ,

सूर्य की प्रचण्डता में,
शशि की शीतलता में,
तारों की पुलकता में—
न्यूनता दिखाती आज ;

होते न प्रताप में भी—
जैसा नाम वैसा गुण;
'दौलत' शास्त्रोक्त बातें—
मिथ्या कहलातीं आज ।

दीन कहें कर्णराज,
प्रजा कहें धर्मराज,
विरक्त ऋषभ कहें,
रामा कहें रतिनाथ;

बनचारी कहें कृष्ण,
साधु कहें रामचन्द्र,
विप्र कहें हरिश्चन्द्र,
योगी कहें ऊमानाथ ;

भूप कहें शेषनाथ,
अरि कहें पार्थवर,
कामी कहें कामतरु,
शाह कहें रमानाथ ;

प्रताप को जान सका –
भेद न 'दौलत' एक;
नृसिंह प्रताप सिंह—
हिंद के हैं प्राणनाथ।

जालंधरयुवती का—
शील हरा छलकर,
रूद्र रिपु रावण से--
राम रमणी के हैं।

विभीषण, सुग्रीव-से—
भ्रातृजाया-भोगी भक्त—
रामचन्द्र के हैं, जो कि-
चोर कामनी के हैं।

जाया न संभाल सके,
लाये पर जाया हर,
अवतार ऐसे नहीं—
होते अवनि के हैं।

व्रत में 'दौलतसिंह'
स्वाधीन प्रतापसिंह—
राम रघुपति से—
चौबीस बार नीके हैं।

सूरज में तेज तू है,
तारों में चमक तू है,
शशि में प्रतापसिंह !
तेरा ही प्रकाश है।

जल में नैर्मल्य तू है,
आग में प्रताप तू है,
नभ में प्रतापसिंह !
तेरा ही उच्छ्वास है।

धर्म में सुसार तू है,
अर्थ में सुलाभ तू है,
काम में स्वाह्लाद तू है,
मुक्ति में उजाश है।

अखण्ड स्वतन्त्रता के—
पूजारी प्रतापसिंह !
तेरे दृढ़ तप से ही
सब में हुलाश है।

अतिघोरवर्षाकाल--
संभूतनीरदमाला—
घनीभूततमहर—
उड़गननभगा—

स्वामिसुधासिन्धुकर--
निदाघप्रतापहर—
जगतीनयनवर—
त्रिदिवेशवर्त्मगा—

प्रचण्डअजातरिपु—
सर्वऋतुकुलकर—
करपुंजदिनकर—
वृन्दारकपथगा—

भूनरघुकुलजात—
मुगलतिमिरहर—
प्रतापप्रखरसूर—
कलि में है व्योमगा।

तल पर मर्त्यतल,
स्वर्ग मर्त्यतल पर,
स्वर्ग पर सुरपति--
अमरनगर है।

विंध्य अर्बुदाद्रि पर,
हिम विंध्याचल पर,
हिमाचल गिरिपर--
हेमगिरिवर है।

नर पर नृपवर,
नृप पर चक्र-धर,
चक्रधर पर सुर,
शुक्र सुर पर है!

हल्दीघाटी-मेरु पर--
पर्ण-कुटी-स्वर्ग पर--
प्रताप 'दौलतसिंह'--
सहस्राक्षधर हैं।

तप से तपस्वी सोहे,
योग से सुयोगी सोहे,
सिद्धि से साधक सोहे,
भक्त भगवान से।

दया से सुमन सोहे,
धन से कुबेर सोहे,
भोग से वासव सोहे,
ब्रह्म जन ज्ञान से।

रण से सुभट सोहे,
नीति से नायक सोहे,
भूमि से भूपाल सोहे,
दानी सोहे दान से।

अखण्ड स्वतंत्रता के--
पूजारी प्रताप सोहे—
जग में 'दौलत सिंह'
एक स्वाभिमान से।

गुलाम, सैयद, लोधी—
भिड़ चुके जिनसे थे,
आलम अल्लाउद्दीन—
जानता था जिनको ;

हार चुका जिनसे था—
सुलतान मुहमद,
बाजबहादुर खाँ तो—
पूजता था जिनको ;

तौल चुका जिनके था—
बल को बाबर शाह,
बादशाह हुमायूँ न—
छेड़ता था जिनको ;

जीतना 'दौलत' उन्हें—
चाहता था अकबर,
बाप-दादा जिसके न—
जीत सके जिनको ।

स्वाभिमान बिखरा था—
चेतन में, वदन में,
स्वातंत्र्य की भावनाएँ—
जगती थीं मन में।

देश का गौरव और—
कुल की मर्यादा सदा—
रहती थी स्मृत जाग—
रण में, सपन में।

धर्म का उत्साह-निधि—
उमड़ता रहता था,
क्षात्रपन मारता था—
उछाले जीवन में।

'दौलत' प्रताप रहा—
देश का पुजारी सच्चा—
तन में, मन में और—
कृति में, वचन में।

भामाशाह

(१)

मेवाड़ के अधिपों की इस कलयुग में भी—
अखिल जगत पर छप रही छाप है,
विमल क्षत्रियों का जो बच गया बीज और—
हिन्दूमात्र में जो शेष रह गया आप है,
अकबर महान का जिस हेतु जगती के—
सम्राटों के साम्य में जो घटा हुआ दाप है;
सब ये 'दौलतसिंह' एक मात्र देशभक्त—
भारतभूषण 'भामाशाह' का प्रताप है।

(२)

कपीश्वर सुग्रीव जो करता न सहायता—
राम की, कहो तो आज रघुज क्या बचते ?
अमरों को दधिचि जो अस्थियों का देते नहीं—
दान तो, कहिये आज सुर क्या जी सकते ?
यदि यदु-कुल-मणी होते नहीं, पांडव क्या—
खोये हुये राज्य को यों पुनः जीत सकते ?
ऐसे ही 'दौलत' 'भामा' होते न सहायभूत—
प्रताप के, आज राणा क्या यों कढ़ सकते ?

(३)

लक्ष्मी के विलासी, त्यागी, स्वाभिमानी भामाशाह !
तेरा गुण-ग्राम करें कविगण कितना !
प्राणों से प्यारा है धर्म, जाति है जीवन-मर्म,
देश का गौरव प्रिय स्वर्ग से है सौ गुना।
तू ने तो 'दौलत' इन तीनों के लिए ही फिर—
तन-मन-धन सब लुटाया है अपना।
लक्ष पृथ्वीपत्र में भी सहस्र भवों में नहीं—
कवि बाण❀ लिख सके लेख तेरा इतना।

❀बाण से अर्थ हजार हाथ वाला कवि।

झालाराणा मानसिंह

(१)

मलेच्छों के भार से यों लचकती धरती थी,
लचकती है ज्यों मञ्ज रति-पति-भार से।
झुक-झुक जाते शेषनाग के सहस्र फण,
झुक जाती है ज्यों शाखा भूरि फल-भार से।
अतल - वितलकार ऐसा महाभयभार—
हर गये मानसिंह! 'प्रताप' दुधार से।
लेकिन 'दौलत' ऐसे महाभारहारी को भी—
दबा दिया 'मान' तू ने एक उपकार से।

(२)

गोलियों की बौछारों में, बल्लम की कतारो में
'दौलत' जैसे ही देखा ग्रसित प्रताप को;
बाणों के वर्षण बीच, तोपों के निनाद बीच
कुचलता हुआ चला यवनों के दाप को।
सामंत तू मानसिंह! प्राणों पर खेल गया,
प्रताप को बचा गया भेट कराकर आपको।
प्रताप को बचाकर देश को चढ़ाया ऊँचा,
आप भी ऊपर चढ़ा चढ़ाकर आप को।